जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – दिसंबर 2020 ।। अंक–05 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

आपदा में अवसर
(पृष्ठ – 02)

जीविका की मदद से आमीना दीदी ने आर्थिक दुश्वारियों को किया दूर
(पृष्ठ – 03)

जीविका सामुदायिक संगठनों के माध्यम से गरीबी उन्मूलन और ग्राम पंचायत विकास योजना तैयार करने में बढ़ी जन भागीदारी
(पृष्ठ – 04)

जीविका के प्रयास से मिला वैकल्पिक रोजगार का अवसर

कोरोना काल में आम लोगों को कई प्रकार की मुसीबतों का सामना करना पड़ा। कोरोना संक्रमण काल में एक तरफ जहाँ आम लोग कोरोना बीमारी से परेशान थे, वहीं, दूसरी तरफ उनके समक्ष रोजगार की भी समस्या थी। कोरोना वायरस के प्रसार के साथ ही किसी न किसी क्षेत्र से कर्मचारियों को बिना वेतन के छुट्टी देने, नौकरियों से निकालने, वेतन में भारी कटौती की खबरें आ रही थीं। मॉल्स, रेस्तराँ, होटल सब बंद हो गए थे। विमान सेवाओं और आवाजाही के अन्य साधनों पर भी रोक लगी हुई थी। फैक्टरियाँ, कल–कारखाने सभी ठप पड़े हुए थे। ऐसे में कई संस्थान लगातार कामगारों की छँटनी कर रहे थे। हर कोई इसी डर और चिंता के साये में जी रहा था कि न जाने कब उसकी नौकरी चली जाए। स्वरोजगार में लगे छोटे–मोटे काम धंधे कर परिवार चलाने वाले भी कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करने को मजबूर थे। जिनकी भी नौकरी चली गयी या स्वरोजगार बंद हो गया वे सभी घर में बैठने को मजबूर थे। अचानक आर्थिक तंगी के कारण मानसिक परेशानी के साथ मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का भी सामना उन्हें करना पड़ रहा था।

इन परिस्थितियों के बीच बड़े स्तरों पर प्रवासी कामगारों की वापसी उनके अपने गांवों में हुई। कामगारों की वापसी के बाद उनके समक्ष जीवन को फिर से व्यवस्थित करने एवं रोजगार की संभावनाओं को तलाशना था। अन्य प्रयासों के साथ ही जीविका द्वारा भी प्रवासियों एवं कामगारों के रोजगार सृजन के नवाचार को अपनाया। जीविका द्वारा प्रशासनिक स्तर से प्रवासियों की सूची प्राप्त कर उनकी पहचान की गयी। योग्य प्रवासी परिवारों को जीविका समूह से जोड़कर उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ उपलब्ध करवाने की दिशा में सकारात्मक कदम उठाए गए। कई स्थानों पर रोजगार शिविर द्वारा रोजगार की उपलब्धता सुनिश्चित की गयी तो कई स्थानों पर उन्हें स्थानीय स्तर पर विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षण उपलबध करवाकर रोजगार दिलवाया गया। जीविका द्वारा रणनीति बनाकर रोजगार से वंचित हो चुके कामगारों के लिए रोजगार की उपलब्धता सुनिश्चित की गयी। जीविका ने समूह, ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संघ स्तर तक पर रोजगार की उपलब्धता के लिए प्रयास किया और इसका काफी साकारात्मक असर देखने को मिला।

इन प्रयासों के साथ ही आजीविका के लिए सरकार द्वारा संचालित गरीब कल्याण रोजगार अभियान (जीकेआरए) के तहत रोजगार की व्यवस्था की गयी। गरीब कल्याण रोजगार योजना का सफल कियान्वयन भी जीविका द्वारा किया गया। जीकेआरए के जरिए जीविका द्वारा कई स्तरों पर कार्य किये गये। गरीब कल्याण रोजगार अभियान (जीकेआरए) की सफलता में 12 मंत्रालयों, विभागों और राज्य सरकारों के सम्मिलित प्रयास हुए। जीविका द्वारा प्रवासी श्रमिकों और ग्रामीण समुदायों को अधिकतम लाभ प्रदान किया जा रहा है। जीविका द्वारा 2 लाख से अधिक प्रवासी परिवारों को समूह के साथ जोड़ा गया और प्रवासी कामगारों को कैडर के रूप में भी चयनित किया गया। प्रवासी परिवारों के सहायता हेतु समूहों को चक्रीय निधि एवं आईसीएफ की राशि उपलब्ध करवाई गई। इन प्रक्रियाओं के साथ प्रवासी परिवारों को ऋण प्राप्ति हेतु बैंकों के साथ जोड़ा गया। प्रवासी कामगारों को जीविका द्वारा स्वरोजगार, कृषि, गैरकृषि एवं लाइवस्टॉक जैसी गतिविधियों से जोड़ा गया। साथ हीं प्रवासियों को स्थानीय स्तर पर विभिन्न कंपनियों में काम उपलब्ध करवाया गया।

प्रवासियों एवं कामगारों के रोजगार सृजन हेतु जीविका समस्तीपुर द्वारा कोरोना महामारी के प्रकोप के दौरान कई कदम उठाये गए। अपने गांवों में लौटने वाले प्रवासी श्रमिकों और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावित अन्य नागरिकों के लिए रोजगार और आजीविका के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए जीविका द्वारा शुरू किए गए अभियान से प्रवासियों के जीवन में काफी बदलाव आए। इसी तरह के बदलाव के उदाहरण हैं समस्तीपुर के ताजपुर प्रखंड के मोहम्मद शाहिद। शाहिद को जीविका की मदद मिली और वे अपने पंखे के व्यवसाय को नई ऊंचाई पर ला चुके हैं।

प्रवासी मजदूर को मिला घर में ही स्वरोजगार

सुपौल जिला के निर्मली प्रखंड स्थित बेला सिंगार मोती पंचायत के कैम्प टोला में आम जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी ममता दीदी के पति सुमन सौरभ राज्य से बाहर मजदूरी का काम करते थे। लेकिन लॉकडाउन के दौरान काम बंद हो जाने से उन्हें मुश्किलों का सामना करना पड़ा। विपरीत हालात के बीच वे किसी तरह घर आ सके। घर लौटने के बाद वे अपने घर में कोई रोजगार शुरू करना चाहते थे। लेकिन कोई उपाय नहीं दिख रहा था। इसी बिच उनकी पत्नी ममता देवी को समूह का सहारा मिला। ममता देवी ने स्वयं सहायता समूह से 40 हजार रुपये ऋण लेकर हॉलर–चक्की का व्यवसाय शुरु किया ताकि पति के लिए घर में ही स्वरोजगार की व्यवस्था हो सके।

जीविका की मदद से हॉलर–चक्की की मशीन लगा कर ममता दीदी ने अपने पति को रोजगार उपलब्ध कराया। अब ममता और उनके पति दोनों मिलकर किराना दुकान एवं हॉलर–चक्की का मिल चलाते हैं। इससे उन्हें प्रतिदिन कुल मिलाकर औसतन 300 से 400 रुपये तक की आमदनी हो जाती है। ममता देवी की इस पहल से स्थानीय लोगों को भी सुविधा हो रही है। स्थानीय लोगों ने बताया कि पहले उन्हें गेहूं–चावल–दाल आदि पिसवाने के लिए कोसों दूर जाना पड़ता था पर अब कैम्प टोला में भी मशीन लग जाने से समय और मेहनत दोनों की बचत हो जाती है।

आपदा में अवसर

कोरोना काल की विश्वव्यापी आपदा में जीविका गरीब परिवारों के लिए संबल बनकर खड़ी रही है। उन्ही में से एक परिवार है बक्सर जिले के केसठ प्रखंड के केसठ गाँव की जीविका दीदी सरिता देवी का। सरिता देवी के पति श्री मदन प्रसाद अपने गाँव में ही रहकर ड्राइवर का काम करते हुए अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ जीवन यापन करते थे। लेकिन कोरोना काल में लॉकडाउन के कारण वाहनों का चलना भी बंद हो गया। ऐसे में सरिता के परिवार के समक्ष आर्थिक कठिनाई उत्पन्न हो गई।

सरिता ने अपनी समस्या से अपने बंधन स्वयं सहायता समूह को अवगत कराया। समूह ने तत्काल आकस्मिक बैठक बुलाकर सरिता को आर्थिक रूप से सहयोग करने के साथ ही स्व–रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की योजना बनाई। सरिता को उनकी रूचि के अनुसार जेनरल स्टोर खोलने के लिए तीस हजार रुपये का ऋण दिया गया। साथ ही एक माह के लिए प्रखंड परियोजना प्रबंधक, केसठ द्वारा राशन भी उपलब्ध कराया गया। लॉकडाउन के समय में दुकान के लिए आवश्यक वस्तुओं की खरीददारी में भी जीविका की स्थानीय टीम ने सहयोग दिया। वर्तमान में सरिता जीविका समूह से ऋण लेकर जेनरल स्टोर की दुकान चला रही है। सरिता इस दुकान में प्रतिदिन सात से आठ सौ रुपये की बिक्री कर लेती है जिससे उसे दो सौ से तीन सौ रूपये की आमदनी प्रतिदिन होती है। सरिता बताती हैं कि पति की नौकरी छूटने से वो काफी परेशान थीं। लेकिन जीविका ने उन्हें और उनके परिवार को नया जीवन दिया है।

जीविका की मदद से आमीना दीदी ने आर्थिक दुश्वारियों को किया दूर

किशनगंज जिला के किशनगंज सदर प्रखंड अंतर्गत महीन गाँव पंचायत के सिया टोला गाँव की रहने वाली हैं अमीना खातून। अमीना दीदी ने लॉकडाउन से उत्पन्न आर्थिक दुश्वारियों में भी खुद के ऊपर भरोसा कायम रखा। इस मुश्किल दौर में, अमीना दीदी के इस भरोसे के साथ जीविका कदम से कदम मिलाकर साथ खड़ा रहा। कहते हैं कि जहाँ चाह हो वहाँ राह निकल ही आती है। दीदी ने जीविका ग्राम संगठन से ऋण लेकर भैंस खरीदी और दूध की बिक्री शुरू की। इसकी आमदनी से दीदी ने घर की जरूरतों को पूरा किया। लेकिन यह सब इतना आसान नहीं था। 24 मार्च 2020 को कोरोना से बचाव हेतु देशव्यापी लॉकडाउन में अमीना दीदी के दोनों बेटे बेरोजगार हो गए। ये शहर में मजदूरी करते थे। जो कुछ भी पहले का जमा पूंजी था वह कुछ ही महीने में समाप्त हो गया। घर की मामूली जरूरतों के लिए भी पैसे नहीं थे। 9 पोते, पोतियों सहित कुल 14 लोगों के इस परिवार के लिए रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करना, दिन–प्रतिदिन काफी मुश्किल होता जा रहा था। इस मुश्किल भरे दौर में 60 वर्षीय विधवा आमीना दीदी ने परिवार की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली। दीदी बताती हैं कि उन्होंने जीविका ग्राम संगठन से 60 हजार रुपये ऋण लेकर भैंस खरीदी जिससे प्रतिदिन लगभग 6 लीटर दूध बेच कर लगभग 250 रुपये कमा लेती हैं। भैंस को रोज 50 रुपये का दर्रा खिलाने के बाद भी लगभग 200 रुपये की आय हो जाती है। लॉकडाउन और बेटों की बेरोजगारी से जिस घर में खाने के लाले पर गए थे, वहाँ दीदी अपने सूझबूझ से महीने के 6 हजार रुपये की कमाई कर रही हैं। लॉकडाउन में बेटों का कामकाज ठप होने के बाद भी दीदी जीविका के सहयोग से घर की गाड़ी को एक बार फिर से पटरी पर ला सकी।

लॉकडाउन के दौरान मनरेगा मेट के रूप में मिला रोजगार का अवसर

पूर्णियाँ जिला के धमदाहा प्रखंड अंतर्गत धमदाहा पूर्व पंचायत के बघवा गाँव में फेकनी कुमारी अपने परिवार के साथ निवास करती हैं। फेकनी कुमारी 23 मार्च 2010 को सबरी जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनीं थी। वे समूह से लोन लेकर छोटे–मोटे काम करने लगीं। समूह से लोन लेकर एक सिलाई मशीन खरीदकर सिलाई का काम करने लगीं। धीरे–धीरे कपड़े की सिलाई से आमदनी बढ़ने से समय के साथ आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा तथा घर परिवार ठीक–ठाक चलने लगा। वह ससमय ऋण भी चुकता करने लगीं।

वर्ष 2020 में जब पूरे देश में कोविड–19 से बचाव हेतु लॉकडाउन लगा तो कारोबार प्रभावित हुआ और वे बेरोजगार हो गयीं। लॉकडाउन के दौरान ही जीविका–मनरेगा सी॰एफ॰टी॰ टीम के मनरेगा सलाहकार द्वारा ग्राम संगठन की कई दीदियों को मनरेगा मेट के बिषय में जानकारी दी। मेट का कार्य मनरेगा में काम करने वाले मजदूरों के साथ रहकर मास्क पहनना सुनिश्चित करना, उनकी देख – रेख करना, सामाजिक दूरी का पालन कराना एवं काम के शुरूआत एवं अंत में साबुन से सभी का हाथ अवश्य धुलवाना इत्यादि है। मनरेगा अन्तर्गत सबसे पहले बघवा गाँव में निजी भूमि पर एक पोखर खुदाई में फेकनी को मेट के रुप में काम मिला। यह कार्य 40 दिन तक चला एवं कुल 1004 मानव दिवस का सृजन हो पाया । फेकनी कुमारी को मेट के रुप में कार्य करने के लिए 40 मानव दिवस हेतु 159 रू प्रतिदिन के हिसाब से कुल 6360 रूपये की कमाई हुई, जिससे कठिन समय में उनके परिवार के सदस्यों को राहत मिली।

जीविका सामुदायिक संगठनों के माध्यम से गरीबी उन्मूलन और ग्राम पंचायत विकास योजना तैयार करने में बढ़ी जन भागीदारी

जन केंद्रित विकास एवं स्थानीय लोकतंत्र को बढ़ावा देने के जारी प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए लोक योजना अभियान के तहत विभिन्न विभागों के बीच समन्वय से ग्राम पंचायत विकास योजना तैयार करने का काम किया जा रहा है। इस कार्य में जन भागीदारी सुनिश्चित करने में जीविका संवर्धित सामुदायिक संगठन उल्लेखनीय भूमिका निभा रहे हैं। इसके दो मुख्य घटक–मिशन अंत्योदय का सर्वेक्षण एवं ग्राम पंचायत विकास योजना (जीपीडीपी) के निर्माण के दौरान समुदाय आधारित संगठनों– स्वयं सहायता समूह एवं ग्राम संगठनों के माध्यम से ग्रामीण गरीबी उपशमन योजना (वीपीआरपी) का निर्माण कराया जा रहा है। इससे स्थानीय लोकतंत्र की मजबूती के साथ ही ग्राम पंचायत के समेकित विकास हेतु योजना तैयार करने में आम जनता की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित हो पा रही है। इसका मूल उद्देश्य है गांवों के विकास के लिए बन रही योजनाओं में सभी व्यक्ति एवं समुदाय सहभागी हों और वे अपनी जरूरतों के मुताबिक परियोजनाओं का चयन कर सकें ताकि उनका समुचित विकास हो सके।

मिशन अंत्योदय एक अभिसरण फ्रेमवर्क है, जिसका उद्देश्य सरकार द्वारा क्रियान्वित की जा रही विभिन्न प्रकार की योजनाओं की प्रगति से जुड़ी सूचनाओं का संग्रहण करना। सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों एवं अनुमानित आवश्यकताओं के आलोक में ग्राम पंचायत विकास योजना तैयार की जाती है। मिशन अंत्योदय हेतु निर्धारित प्रपत्र–2 के अनुरूप अंकड़ों के संग्रहण हेतु प्रखंड परियोजना प्रबंधक संबंधित प्रखंड विकास पदाधिकारी से समन्वय कर तीन से पांच पंचायतों के कलस्टर स्तर पर विशेष बैठक आयोजित करते हैं। इसमें जीविका से संबंधित संसाधन सेवी या कैडर, पंचायत सचिव, कृषि, शिक्षा, पशुपालन एवं आईसीडीएस जैसे महत्त्वपूर्ण विभागों के कर्मियों की सहभागिता से प्रपत्र–2 से संबंधित आंकड़ों के संग्रहण में निर्धारित पंचायत नोडल कर्मी को सहयोग प्रदान करते हैं। भरे हुए प्रपत्रों का ग्राम सभा से अनुमोदन कराया जाता है। इस प्रक्रिया के दौरान समूह स्तर से हकदारी मांग पत्र और आजीविका संबंधित योजना तैयार कर ग्राम संगठन स्तर पर एवं पंचायत स्तर पर प्रपत्र संकलित करवाकर इन्हें ग्राम सभा में समर्पित किया जाता है ताकि उन्हें ग्राम पंचायत विकास योजना के रूप में प्रस्तावित किया जा सके। इन प्रपत्रों के संकलन से जुड़े कार्य ग्राम संगठन स्तर पर नामित बुक कीपर या अन्य कैडर करते हैं। सामुदायिक उत्प्रेरकों द्वारा समूह स्तर पर प्रपत्र 1–ए को भरकर संबंधित बुककीपर के माध्यम से पंचायत स्तर के सभी ग्राम संगठनों के आंकड़ों को संकलित किया जाता है ताकि निर्धारित प्रपत्र में पंचायत गरीबी उन्मूलन परियोजना का निर्माण होने के साथ ही ग्राम पंचायत विकास योजना में शामिल करवाया जा सके। कार्य की गुणवत्ता के अनुश्रवण हेतु संकुल स्तरीय संघ या ग्राम संगठन स्तर पर सामाजिक कार्य समिति को जिला स्तर पर प्रशिक्षित किया गया है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्री ब्रज किशोर पाठक – विशेष कार्य पदाधिकारी
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णिया
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर
- श्री विकाश राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री सुमन कुमार – प्रबंधक संचार, किशनगंज